SHRI B. S. MURTHY : The N.D.M.C. borrows the services of engineers as and when they need them., therefore there was no possibility of asking the State Government that they would want an expert on such and such a subject and also a Scheduled Caste. Now the N.D.M.C. is thinking of forming its own cadres. As I have stated earlier, they wanted to have in a panel of 11 candidates for the three Assistant Engineers' posts and one has been reserved for a Scheduled Caste.

TRANSFER OF CHANDNI CHOWK KOTWALI DELHI TO GURDWARA SIS GUNJ

*473. SARDAR NARINDAR SINGH BRAR : †
SARDAR GURCHARAN SINGH TOHRA :

Will the Minister of HEALTH AND FAMILY PLANNING AND WORKS, HOUSING AND URBAN DEVELOPMENT be pleased to state :

(a) whether it is a fact that the Delhi Administration has recommended to the Union Government to hand over the part of the Chandni Chowk Kotwali, Delhi to the Sis Gunj Gurdwara free of cost keeping in view its sacred character and sentiments of the people;

(b) if so, whether Government propose to return the money already taken from the Gurdwara Sis Gunj Management; and

(c) if not, the reasons therefor?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY PLANNING AND WORKS, HOUSING AND URBAN DEVELOPMENT (SHRI B. S. MURTHY) : (a) and (b) No, Madam.

(c) The terms and conditions for the transfer of the Kotwali building to the Gurdwara Prabandhak Committee were mutually agreed upon between the Gurdwara Prabandhak Committee and the Delhi Administration.

سردار نریندر سنگھ برار : میں منسٹر صاحب سے پوچھنا چاھوں گا کہ جب ایسٹ انڈیا کمپنی آئی تو اس نے بھی آ کر یہ کہا کہ سکھوں کی بے حد قربانیوں کو مد نظر رکھتے ھوئے یہ جو کوتوالی ھے وہ شیشہ گنج کا حصہ ھے تو اس کے بعد کیا وجہ ھے کہ ھماری اپنی حکومت نے اس کو گرودوارے کا حصہ نہیں مانا جب کہ سکھوں کی بے شمار قربانیاں ھیں - اس کے بعد سردار سورن سنھ اور مسٹر جھا ؛ سب نے یہ کہا - اس پر بھی اس کوتوالی کے لئے سولہ لاکھ ۳۵ ھزار روپیہ لیا - اس وقت بھی ان لوگوں نے یہ کہا کہ گورنمنٹ کو یہ مفت دینا چاھئے اور یہ روپیہ واپس کر دینا چاھئے -

دوسرا سوال یہ ھے کہ آپ نے ھر جگہ ھر مندر یا مسجد کے سامنے پارک وغیرہ بنایا ھے تو ھمارے گرودوارے کے سامنے ؛ ھمارے کسی گرودوارے کے سامنے ، اس کو بنانے کے لئے ایسا کوئی قدم نہیں اُٹھایا - جو کوتوالی ھے اس کو گرودوارے کا حصہ مانتے ھیں حالانکہ اس کے لئے میوچولی ایگری کیا اور روپیہ دینے کو مانا لیکن اس کے بعد بھی جب کہ پارک ، سرائے وغیرہ بنانے کے لئے اور جگہ ایک روپیہ گز پر دیتے ھیں تو اس جگہ کے لئے سولہ لاکھ ۳۵ ھزار روپیہ لینے کی کیا وجہہ تھی ؟

†[सरदार नरेन्दर सिह बार : मै मिनिस्टर साहब से पूछना चाहूंगा कि जब ईस्ट इंडिया कम्पनी आई तो उसने भी आ कर यह कहा कि सिखों की बेहद कुर्बानियों को मद्देनजर रखते हुये यह जो कोतवाली है वह शीशगंज का हिस्सा है तो उसके बाद क्या वजह है कि हमारी अपनी हुकूमत ने इसको गुरुद्वारा का हिस्सा नहीं माना जब कि सिखों की बेशुमार कुर्बानियां हैं । उसके बाद सरदार स्वर्ण सिह, मिस्टर झा, सबने यह कहा । इस पर भी इस कोतवाली के लिये 16 लाख 35 हजार रुपया लिया । उस वक्त भी इन लोगों ने यह कहा कि गवर्नमेंट को यह मुफ्त देना चाहिये और यह रुपया वापस कर देना चाहिये ।

†The question was actually asked on the floor of the house by Sardar Narindar Singh Brar.

†[ ] Hindi transliteration.

दूसरा सवाल यह है कि आपने हर जगह, हर मन्दिर या मस्जिद के सामने, पार्क वगैरह बनाया है तो हमारे गुरुद्वारे के सामने, हमारे किसी गुरुद्वारे के सामने, इसको बनाने के लिये ऐसा कोई कदम क्यो नही उठाया। जो कोतवाली है उसको गुरुद्वारा का हिस्सा मानते है, हालांकि उसके लिये म्युचुअली एग्री किया और रुपया देने को माना, लेकिन इसके बाद भी जब कि पार्क, सराय, वगैरह बनाने के लिये और जगह एक रुपया गज पर देते है तो इस जगह के लिये 16 लाख 35 हजार रुपया लेने की क्या वजह थी ?]

SHRI B S. MURTHY : As a matter of fact when this 0 7 acre was agreed to by the Prabandhak Committee, there was no question of selling the land. The Prabandhak Committee agreed to pay the cost of the superstructures worth about Rs. 16.35 lakhs and it also agreed that if the Government is able to get land free for the construction of Kotwali, there would be no question of charging any money for the land given but if they have to purchase, the Prabandhak Committee agreed to pay the cost.

سردار نریندر سنگھ برار : میں نے تو آپ سے یہی سوال کیا ہے کہ جو آپ کہہ رہے ہیں کہ بلڈنگ کا پیسہ دیا تو یہ بہت پرانی بلڈنگ ہے آخرکار اس کو گرانا ہی ہے - پربندھک کمیٹی نے مان لیا اس لئے کہ ہمارے پاس سانس لینے کو جگہ نہیں تھی - کوئی سرائے وغیرہ نہیں بنا سکتے تھے ہم مجبور تھے آپ نے نہیں دیا - آپ نے ۱۶ لاکھ ۳۵ ہزار روپیہ مانگا بھی تو میرا کہنا ہے کہ ہماری سینٹرل گورنمنٹ نے سکھوں کے لئے خاص طور پر کیا فراخ دلی دکھلائی ہے جب کہ آپ کے سینیر منسٹر اور سب آدمی کہہ رہے ہیں کہ یہ مفت ملنی چاہئے -

†[सरदार नरेंदर सिंह ब्रार : मैंने तो आपसे यही सवाल किया है कि जो आप कह रहे है कि बिल्डिग का पैसा दिया तो यह तो बहुत पुरानी बिल्डिग है, आखिरकार उसको गिराना ही है, प्रबन्धक कमेटी ने मान लिया, इसलिये कि हमारे पास सास लेने को जगह नही थी, कोई सराय वगैरह नहीं बना सकते थे, हम मजबूर थे, आपने नही दिया, आपने 16 लाख 35 हजार रुपया मागा भी, तो मेरा कहना है कि हमारी सेट्रल गवर्नमेंट ने सिखो के लिये खास तार पर क्या फराखदिली दिखलाई है, जबकि आपके सीनियर मिनिस्टर और सब आदमी कह रहे है कि यह मुफ्त मिलनी चाहिये।]

SHRI B S MURTHY : The question does not arise as far as the Central Government is concerned It is an agreement between the Delhi Administration and the Prabandhak Committee. The present estimated cost of the building is Rs 16.35 lakhs.

سردار نریندر سنگھ برار میرے سوال کا جواب نہیں دیا - میں نے تو یہ کہا ہے کہ جب آپ کے سینیر منسٹر بھی یہ کہتے ہیں - ملہوترا صاحب اور جھا صاحب بھی یہ کہتے ہیں کہ اس کو مفت دینا چاہئے تو آپ نے کوئی وچار کیا اور اگر نہیں کیا تو کیا وجہ ہے ؟ میں نے یہ پوچھا تھا اس کا جواب آپ نے نہیں دیا -

†[सरदार नरेंदर सिंह ब्रार : मेरे सवाल का जवाब नही दिया। मैंने तो यह कहा है कि जब आपके सीनियर मिनिस्टर भी कहते है, मल्होत्रा साहब और झा साहब भी कहते है कि इसको मुफ्त देना चाहिये तो आपने इस पर कोई विचार किया और अगर नही किया तो क्या वजह है ? मैंने यह पूछा था, उसका जवाब आपने नही दिया।]

SHRI B S MURTHY : I am not able to understand it.

SHRI NARINDAR SINGH BRAR : I can repeat it.

श्री के० के० शाह : मैं आपको बताता हू। आपने कहा कि फोकट मे देने मे क्या हर्जा है। यह आपका सवाल है। तो दिल्ली

†[ ] Hindi transliteration.

एडमिनिस्ट्रेशन ने प्रबन्धक कमेटी के साथ समझौता किया। आज तक कही पर ऐसा नही हुआ है कि खडे हुये मकान को गिरा दें अगर उस जगह पर किसी के बारे मे कोई मेमोरियल करना हो, फिर भी यह मजूर किया गया कि मकान की कीमत हम दे देते है कलेक्शन कर के। तो यह एग्रीमेट हुआ कि अच्छा हो कोतवाली का मकान आप दे दे, दूसरी जगह कोतवाली बना देगे। प्रबन्धक कमेटी जिसमें हमारे अकाली दोस्त मेजारिटी मे है इनके साथ समझौता हुआ तो फिर आप क्यो परेशान है।

سردار نریندر سنگھ برار : میں پریشان نہیں ہوں – میرے سوال کا جواب آپ نے نہیں دیا – لک ھیر – میں نے یہ سوال نہیں کیا – میں تو یہ کہتا ہوں کہ سردار سورن سنگھ جھا صاحب ، سب نے یہ کہا کہ ان کو مفت دینا چاھئے آپ کے سینیر منسٹر بھی ھمارے ساتھ ھیں – تو اس کے بارے میں آپ نے کیا وچار کیا – یہ میرا سوال ھے –

†[**सरदार नरेंदर सिह बार** : मै परेशान नही हू। मेरे मवाल का आपने जवाब नही दिया। लुक हीयर, मैने यह सवाल नही किया। मै तो यह कहता हू कि सरदार स्वर्ण सिह, झा साहब, सबने यह कहा कि उनको मुफ्त देना चाहिये। आपके सीनियर मिनिस्टर भी हमारे साथ है। तो उसके बारे मे आपने क्या विचार किया ? यह मेरा सवाल है।]

श्री के० के० शाह : आपस आपस मे हुआ समझौता किसी की ओपीनियन से ज्यादा महत्व का है, ऐसा मै मानता हू।

डा० भाई महावीर : महोदया, इस समझौते की बात कही गई है, यह ठीक है कि समझौता हुआ और उसके अन्तर्गत साढे सोलह लाख रुपया सरकार को प्रबन्धक कमेटी की तरफ से दिया गया है, परन्तु मै यह जानना चाहता हू कि क्या यह सच है कि आज से सात-आठ महीने पहले दिल्ली की एग्जीक्यूटिव कौसिल ने इस बात का प्रस्ताव किया कि जितना रुपया लिया गया है वह रुपया वहा पर एक नेशनल मेमोरियल बनाने के लिये सरकार कांट्रीब्यूशन के तौर पर दे दे, समझौते की जो धारायें है उनका सम्मान रहे परन्तु जैसे कि गालिब मेमोरियल के लिये 16 लाख रुपया दिया गया वैसे दे दे, अब गालिब का जो स्थान है वह हम जानते है, ग़ालिब ने जो कुछ किया है, राष्ट्र के सघर्ष में जो कुछ गालिब की देन है, उसको अलग रखिये, परन्तु इस स्थान का एक बडा ऐतिहासिक महत्व है और उस महत्व को ध्यान में रखते हुये सरकार अगर 16 लाख रुपया गालिब के लिये दे सकती है तो इसके लिये भी दे सकती है कि केन्द्र के लिये राष्ट्रीय स्फूर्ति का एक स्मारक खडा हो सके। तो जो प्रस्ताव एग्जीक्यूटिव कौसिल ने किया था क्या सरकार ने उस पर विचार किया है और अगर किया है तो क्या फैसला किया है और अगर उसको अस्वीकार किया है तो क्यो किया है ?

श्री के० के० शाह : 11 फरवरी के रोज ऐसा प्रस्ताव पास हुआ ऐसी हमे खबर मिली लेकिन आज तक वह प्रस्ताव मेरे यहा नही पहुचा है। एजुकेशन मिनिस्ट्री मे शायद भेजना होगा ऐसा सोच कर के नही भेजा होगा, लेकिन मैने एजुकेशन मिनिस्ट्री मे भी तलाश किया, कोई पक्की तो नही लेकिन ओरल इफार्मेशन मिली है, आई स्टैंड करेक्टेड कि अभी तक यहा पर भी नही पहुचा है और जब पहुचेगा तो इस पर ज़रूर सोचा जायेगा।

डा० भाई महावीर : मै यह जानना चाहता हूँ ...

THE DEPUTY CHAIRMAN No more.

डा० भाई महावीर : वह प्रस्ताव जो आपके पास आये तो उस पर आप विचार करने के लिये तैयार है।

श्री लोकनाथ मिश्र : वह तो उन्होने कहा।

†[ ] Hindi transliteration.